बिरज भासा की उन्नति और विकास

लाड़ली पतरिका

अक्टूबर ते दिसम्बर 2021

कलम तभई
साफ और
अच्छौ लिख
पाबै है, जब बू
थोड़ो झूक्कैं
चलै है। ई हाल
"जिंदगी" में
मांईस कौ है।

nirmaan
empowering communities

छापबे बारी
निरमान सुसाइटी
www.brajbhasha.org.in

पालनहार योजना

योजना कौ मकसद: अनाथ बच्चान के पालन-पोसन काजैं उनकी सिक्छा, भोजन, वस्त्र और अनेक सुविधा उपलब्ध करानौ है। ई योजना राज्य सरकार की तरफ ते चलाई जा रही है।

योजना काजैं योग्यता और दिये जाबे बारे लाभ:

- अनाथ बच्चा
- न्यायिक प्रिक्रिया ते मृत्यु दन्ड/आजीवन कारावास दिये गये मां-बाप की संतान।
- विधवा मां की जादा ते जादा 3 संतान।
- नाता जाबे बारी मां की जादा ते जादा 3 संतान।
- पुनरविवाह विधवा मां की संतान।
- एड्स के मारे मां-बाप की संतान।
- कुस्ट बीमारी के मारे मां-बाप की संतान।
- हात पांम ते लाचार मां-बाप की संतान।
- तलाकसुदा बईयर की संतान।

पालनहार योजना के अन्दर ऐसे अनाथ बच्चान के पालन-पोसन , सिक्छा आदि काजैं पालनहार कौ अनुदान उपल्बध करायौ जाबै है। पालनहार परिवार की सालान आय 1 लाख 20 हजार रूपये ते जादा ना हैनी चहियै।

ऐसे अनाथ बच्चा नै 2 साल की उमर पै आंगनबाड़ी केन्द्र और 6 साल की उमर पै इस्कूल भेजनौ जरूरी है।

हरेक अनाथ बच्चा ऐ पालनहार परिवार ऐ 5 साल के उमर के बच्चा काजैं हर महिना 500 रूपईया और इस्कूल में दाखिला लैबै के बाद हर महिना 1000 रूपईया दिये जामै हैं। और याके अलावा कपड़ा, जूता, सूटर अनेक जरूरत काजैं 2000 रूपईया हर साल (विधवा और नाता की श्रेणी ऐ छोडकैं) अनुदान दियौ जाबै है।

पालनहार परिवार ऐ उक्त अनुदान काजैं फार्म भरबे काजैं सहरी क्षेत्र में विभाग के जिला अधिकारी द्वारा और ग्रामीण क्षेत्र में विकास अधिकारी द्वारा स्वीकार करे जामै हैं।

कहानी (पक्के दोस्त)

एक सेर और एक मूसौ दोनू दोस्त ऐ, दोनू के घर पास-पासई ऐ। एक दिना सेर ऐ एक सिकार मिलौ। बानै मूसे ऐ अबाज लगाई आओ दोस्त, मेरे संग खानौ खा लेयो। बाहर ते अबाज आई। तुमै जो खानौ है खाओ, मोय याते जादा जरूरी काम करने हैं।

सर ऐ बड़ौ बुरौ लगौ। अगलेई दिना मूसे एक सहत कौ डिब्बा मिलौ। बू खाबे खाजैं बैठौ तो बाने सेर ऐ अबाज लगाई, आओ दोस्त मेरे संग खानौ खा लेयो। बहार ते अबाज आई, "मोय ना खानौ ऐ, तुमई खाओ अपने खाने। या बात ऐ सुनकैं मूसे बड़ौ बूरौ लगौ। पर बानै कछु ना कही। दो दिना के बाद दोनू जंगल में मिले। दोनू की दोस्ती इतनी पक्की कै खाबे की बात ऐ भूलकैं फिर ते एक संग खेलबे लगे। बातई-बातई में दोनून नै पतौ चलौ कि सेर ने जब मूसे अबाज लगाई हती तब बानै सुनी नाई, और नाई मूसे नै कोई रूखौ जबाब दियौ। सेर नैऊ ई बात बताई। ना तौ मैने मूसे की अबाज सुनी और नाई रूखौ जबाब दियौ। फिर दोनू समझगे जरूर कछु गड़बड़ है। कोई हमारी दोस्ती ऐ तुड़बाबे की कोसिस कररौय।

या बातै सुनकैं लोमड़ी भागबे कूं करी तभई सेर ऐ और मुसे पतौ चलगई। सेर नै दहाड़कैं कही, रुक जा नहीं तौ मोते बुरौ कोई ना होगो। ऐसे कहकैं सेर नै लपक्कैंनई लोमडी पकड़ लई। सेर नै मूसे ते कही दोस्त आज रात के खाने में मैं लोमड़ी ऐ पकाबे बारौ हूं। रात कौ खानौ तुम मेरे संग खानौ। मूसौ बोलो जरूर आऊंगौ मैं। ऐसे खाने तो मैं छोड़ ही ना सकूं। लोमड़ी और घबरा गई बेचारी माफी मांगबे लगी। सेर बोलो ठीक ऐ, "सौ उठक-बैठक करौ और एक हजार बार बोलो, अब मैं कोई ऐ तंग ना करूंगी"। लोमड़ी बेचारी का करती गलती की सजा तौ बाय मिलनी। अब दो घंटा तक बू याई बाक्य बोलती रई,"अब मैं कोई ऐ तंग ना करूंगी"। सेर और मूसे की दोस्ती और पक्की हैगई।

सीख: अच्छे दोस्त कोई तीसरे के कहे ते अपनी दोस्ती ऐ खतम ना हैमन दैं।

सुविचार

- **पंछी कभऊ अपने बच्चान नैं भविस्य काजैं घोंसला बनाकैं ना दैंमै, बे तो बस बिन्नै "उड़बे" की कला सिखामै हैं।**
- **जिंदगी में ऐसें जिओ अगर कोई आपकी बुराई भी करै तौ दूसरौ बापै बिस्बास ना करै।**

भजन

टेक- डोकरा कूं ना रही ठौर खटोला कूं सुन लै बंसी बारे

बडौ छोरा यौं उठ बोलौ काका की खाट बिछा देऔ कमरा में सुन लै बंसी बारे

बडी बहू यों उठ बोली मेरौ नाज भरेगौ कमरा में

डोकरा कूं ना रही ठौर खटोला कूं सुन लै बंसी बारे॥

दूजौ छोरा यौं उठ बोलौ काका की खाट बिछा देऔ पौरी में सुन लै बंसी बारे

दूजी बहू यौं उठ बोली मेरी भैंस बधंग्गी पौरी में

डोकरा कूं ना रही ठौर खटोला कूं सुन लै बंसी बारे॥

तीजौ छोरा यौं उठ बोलौ काका की खाट बिछा देऔ कोठे में सुन लै बंसी बारे

तीजी बहू यौं उठ बोली मेरी खाट बिछैगी कोठे में

डोकरा कूं ना रही ठौर खटोला कूं सुन लै बंसी बारे॥

चौथौ बेटा यौं उठ बोलौ काका की खाट बिछादेऔ आंगन में सुन लै बंसी बारे

चौथी बहू वाकी यौं उठ बोली मेरे बालक खेलैं आंगन में

डोकरा कूं ना रही ठौर खटोला कूं सुन लै बंसी बारे॥

पांची बहू यौं उठ बोली काका की खाट बिछादेऔ दगरे में,

नाती की बहू ऐसी आई तुमनै दुनिया थूकै चौरे में

डोकरा कूं ना रही ठौर खटोला कूं सुन लै बंसी बारे॥

अगर हारौ हुओ मांईस हारबे के बादऊ "मुस्करा" दे! तौ जीतबे बारौऊ जीत की खुसी खो दैबै है। "ई ऐ मुस्कान की तागत"

सम्पर्क

निरमान सुसाइटी

सहारई रोड़, तहसील-डीग, जिला-भरतपुर,

राजस्थान-321203, मोबाईल नं. 8696208682

बेबसाइट: www.brajbhasha.org.in,

www.nirmaan.org.in

ई-मेल: rajasthanlanguages@nirmaan.org.in

info@nirmaan.org.in